पुरुषोत्तमयोग
(परम पुरुष का योग)

श्रीभगवानुवाच।
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।१।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **ऊर्ध्वमूलम्**=ऊपर की ओर मूल वाले; **अधः**=नीचे की ओर; **शाखम्**=शाखा वाले; **अश्वत्थम्**=पीपल के पेड़ को; **प्राहुः**=कहते हैं; **अव्ययम्**=नित्य; **छन्दांसि**=वैदिक मन्त्र; **यस्य**=जिसके; **पर्णानि**=पत्ते हैं; **यः**=जो; **तम्**=उसको; **वेद**=तत्त्व से जानता है; **सः**=वह; **वेदवित्**=वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, एक पीपल का पेड़ है जिसका मूल ऊपर है और शाखाएँ नीचे की ओर हैं, तथा वैदिक मन्त्र जिसके पत्ते हैं। जो इस वृक्ष को तत्त्व से जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।।१।।

तात्पर्य

भक्तियोग के माहात्म्य का श्रवण करने पर जिज्ञासा हो सकती है कि वेदों का